eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 06, June 2022

कबीर की कविता और उसका समकालीन महत्व

[1]डा0 प्रियंका रानी
[1]सहायक प्रोफेसर हिन्दी, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0

Abstract

संत कबीर, 15वीं शताब्दी के एक प्रमुख संत–कवि, ने अपने समय की सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक व्यवस्थाओं पर गहन प्रश्न उठाए। उनकी कविताएँ, जो साखी, सबद और रमैनी के रूप में प्रचलित हैं, आज भी सामाजिक न्याय, धार्मिक सहिष्णुता और मानवीय मूल्यों के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक हैं। यह शोध पत्र कबीर की कविता के विभिन्न पहलुओं, भाषा, दर्शन, सामाजिक दृष्टिकोण और समकालीन प्रभाव का विश्लेषण करता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि कबीर की वाणी आज भी मानवता के लिए मार्गदर्शक है।

कीवर्ड्स– कबीर, निर्गुण भक्ति, सामाजिक सुधार, धार्मिक सहिष्णुता, समकालीन प्रासंगिकता, साखी, सबद, रमैनी, मानवतावाद, जातिवाद विरोध।

Introduction

भारतीय संत परंपरा में संत कबीर का नाम अद्वितीय और कालजयी है। उन्होंने 15वीं शताब्दी में धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना के क्षेत्र में क्रांतिकारी विचार प्रस्तुत किए। कबीर की वाणी केवल काव्य या भक्ति का माध्यम नहीं थी, बल्कि यह तत्कालीन समाज की विकृतियों पर एक तीखा प्रहार भी थी। उन्होंने न केवल धर्म और जाति के बंधनों को चुनौती दी, बल्कि मानवता, प्रेम और करुणा का एक सार्वभौमिक सन्देश भी दिया। कबीर की कविताएँ, जिनमें साखी, सबद और रमैनी प्रमुख हैं, भाषा की सरलता, शैली की स्पष्टता और विचारों की गहराई के कारण आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी उनके समय में थीं। उन्होंने निर्गुण ब्रह्म की उपासना का संदेश दिया, जिसमें ईश्वर को निराकार और सर्वव्यापी माना गया। उनकी कविताओं में तात्कालिक धार्मिक आडंबर, जातिवाद और सामाजिक विषमता के खिलाफ स्वर मुखर है।

वर्तमान समय में जब समाज में धार्मिक असहिष्णुता, जातिवाद और भौतिकता की दौड़ में मानवीय संवेदनाएँ कहीं खो सी गई हैं, तब कबीर की कविताएँ हमें आत्मचिंतन और आत्मसुधार की प्रेरणा देती हैं। कबीर की वाणी आज भी एक प्रकाशस्तंभ के रूप में मार्गदर्शन करती है, जो मनुष्य को सत्य, प्रेम और करुणा की ओर ले जाती है। इस शोध पत्र में कबीर की कविता की भाषा, दर्शन, सामाजिक चेतना और समकालीन महत्व का गहन विश्लेषण किया जाएगा, जिससे यह स्पष्ट होगा कि कबीर की वाणी न केवल उनके समय के लिए, बल्कि आज के समय में भी एक सशक्त और आवश्यक सन्देश है।

कबीर की कविता, भाषा और शैली– कबीर की कविता का सबसे बड़ा वैशिष्ट्य उसकी सहजता और सादगी में छुपा है। उन्होंने जो भाषा अपनाई, उसे सधुक्कड़ी कहा जाता है, जो अवधी, भोजपुरी, ब्रज, अरबी–फारसी और पंजाबी के मिश्रण से बनी थी। कबीर की कविता की भाषा न तो किसी एक विशिष्ट शैली की थी और न ही उसमें कोई कृत्रिमता या आडंबर था। उनकी वाणी सीधी–सपाट और सच्चाई के निकट थी, जिससे सामान्य जन भी उसे समझ सकें और आत्मसात कर सकें।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 06, June 2022

1. भाषा की सहजता और लोकजीवन से जुड़ाव– कबीर ने अपनी कविता को जटिल शास्त्रीय भाषा में नहीं रचा। उनकी भाषा में गाँव की मिट्टी की खुशबू थी, जो लोकजीवन के साथ गहराई से जुड़ी हुई थी। उन्होंने जिन प्रतीकों और बिम्बों का प्रयोग किया, वे सामान्य जीवन से लिए गए थे, जुलाहा, कुम्हार, लुहार, नाव, पतवार, धागा, बुनाई आदि। इस प्रकार उनकी कविता सीधे जनमानस तक पहुँचने में सफल हुई।

उदाहरण स्वरूप–

माटी कहे कुम्हार से, तू क्या रौंदे मोहि।
एक दिन ऐसा आएगा, मैं रौंदूंगी तोहि।।

2. शैली की विविधता

कबीर की कविता में तीन प्रमुख शैलियाँ देखने को मिलती हैं, साखी, सबद और रमैनी।

साखी, ये दोहे के रूप में होती हैं, जिनमें जीवन का कोई गहरा दर्शन या नीति सूत्र समाहित होता है।

सबद, ये भजन या गीत होते हैं, जिनमें ईश्वर के प्रति भक्ति और प्रेम की अभिव्यक्ति होती है।

रमैनी, ये लम्बी कविताएँ होती हैं, जिनमें दार्शनिक विचारों या सामाजिक सन्देश को विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया जाता है।

3. कबीर की कविता की शैलीगत विशेषताएँ– लाक्षणिकता और प्रतीकात्मकतारू कबीर ने प्रतीकों और उपमानों का सुंदर प्रयोग किया, जैसे जुलाहा और बुनाई के प्रतीक से आध्यात्मिक साधना को व्यक्त किया।

सामाजिक व्यंग्य और तीव्र आलोचना– उन्होंने धार्मिक पाखंड, जातिवाद और आडंबर पर करारा व्यंग्य किया। उनकी कविता में कटाक्ष और प्रश्नवाचक शैली का सुंदर समावेश है।

प्रकृति चित्रण और मानवीय संवेदनाएँ– कबीर की कविता में प्रकृति का चित्रण सहज और सजीव है। साथ ही उनकी वाणी में मानवीय संवेदनाओं की गहराई है।

लय और छंद– कबीर की कविता में सहज लय और गीतात्मकता है, जिससे उनकी रचनाएँ गाने और याद रखने योग्य बनीं। उनकी कविता में दोहा और चौपाई जैसे छंदों का प्रभाव भी मिलता है।

4. कबीर की भाषा और शैली का उद्देश्य– कबीर की भाषा और शैली का उद्देश्य ज्ञान का प्रसार, धार्मिक पाखंडों का खंडन और सामाजिक सुधार था। उन्होंने गूढ़ आध्यात्मिक विचारों को भी इस सरल भाषा और शैली में प्रस्तुत किया कि आम आदमी भी गहराई से उसे समझ सके और उसका जीवन में अनुसरण कर सके।

नमूना पंक्तियाँ

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।।

कबीर की कविता की भाषा और शैली ने उन्हें जनकवि बना दिया। उनकी वाणी सरल और सशक्त है, जिसमें गूढ़ आध्यात्मिक सन्देश, सामाजिक आलोचना और मानवीय करुणा समाहित है। यह भाषा और शैली आज भी कबीर को कालजयी बनाती है।

सामाजिक दृष्टिकोण– कबीर की कविता का सामाजिक दृष्टिकोण उनके युग के सामाजिक ढाँचे और समस्याओं पर गहराई से आधारित है। उन्होंने अपनी वाणी के माध्यम से सामाजिक विषमताओं, रूढ़िवादिता

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 06, June 2022

और धार्मिक आडंबरों पर करारा प्रहार किया। कबीर का दृष्टिकोण केवल एक कवि या संत का नहीं था, बल्कि एक समाज–सुधारक का था, जो तत्कालीन समाज में व्याप्त असमानता, जातिवाद और पाखंड को समाप्त करना चाहता था।

1. जातिवाद और सामाजिक भेदभाव का विरोध– कबीर ने जाति प्रथा और ऊँच–नीच के भेदभाव का कड़ा विरोध किया। उनका मानना था कि मनुष्य का मूल्य उसके कर्म और आचरण से तय होता है, न कि उसकी जाति या जन्म से।

प्रसिद्ध दोहा

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।

मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।

इस दोहे में कबीर ने स्पष्ट किया कि बाह्य पहचान (जाति) नहीं, बल्कि आंतरिक गुण और ज्ञान ही महत्वपूर्ण हैं।

2. धर्म के नाम पर पाखंड का विरोध– कबीर ने धर्म के नाम पर चल रहे आडंबर और पाखंड पर तीखा व्यंग्य किया। उन्होंने मंदिर–मस्जिद, पुरोहित–मुल्ला की संकीर्णताओं को अस्वीकार कर, सीधे और सरल आत्मा–ईश्वर संबंध पर बल दिया।

प्रसिद्ध दोहा

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।।

कबीर ने कर्मकांड की आलोचना करते हुए कहा कि बाह्य पूजा–पाठ से मन की शुद्धि नहीं होती, बल्कि सच्ची भक्ति और आत्मचिंतन से ही उद्धार संभव है।

3. स्त्री की स्थिति और सम्मान– हालाँकि कबीर की कविता में स्त्री विषयक दृष्टिकोण पर तुलसीदास या सूरदास जैसी विस्तारपूर्ण चर्चा नहीं मिलती, फिर भी उनकी वाणी में नारी के प्रति सम्मान झलकता है। उन्होंने साध्वी और गृहिणी दोनों को मानवीय दृष्टि से देखा और उनकी तुलना आध्यात्मिक साधना में साधक से की। कुछ स्थलों पर कबीर ने स्त्री–पुरुष के भेद को भी निरर्थक बताया है।

पंक्तियाँ

नारी नर सम एकै जानो, सब गोपाल के खेल।
कहै कबीर सुनो भइ साधो, राम नाम रस मेल।।

4. शोषित और दलित वर्ग की आवाज– कबीर स्वयं एक जुलाहा परिवार में जन्मे थे और उन्होंने समाज के दलित, वंचित और शोषित वर्ग की पीड़ा को स्वयं महसूस किया था। उनकी कविता में शोषित वर्ग की वेदना मुखरित होती है और वे उसे जागरूक और संगठित होने का संदेश देते हैं। कबीर का यह दृष्टिकोण उनके समय में क्रांतिकारी था और आज भी सामाजिक समानता और न्याय की प्रेरणा देता है।

5. वैश्विक मानवीयता और भाईचारे की भावना– कबीर ने जाति, धर्म, सम्प्रदाय और संकीर्णताओं से ऊपर उठकर संपूर्ण मानवता की बात की। उनका संदेश था कि सभी मनुष्य ईश्वर की संतान हैं और सभी में एक ही आत्मा का वास है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 06, June 2022

प्रसिद्ध पंक्तियाँ

अव्वल अल्लाह नूर उपाया, कुदरत के सब बंदे।
एक नूर से सब जग उपजा, कौन भले कौन मंदे।।

कबीर की यह दृष्टि संकीर्णताओं को तोड़कर मानवीय एकता और समरसता की ओर ले जाती है।

6. आज के सन्दर्भ में प्रासंगिकता– कबीर की सामाजिक दृष्टि आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। आज भी जातिवाद, धार्मिक असहिष्णुता, पाखंड और सामाजिक विषमता जैसी समस्याएँ विद्यमान हैं। कबीर की वाणी हमें जागरूक करती है कि सच्चा धर्म, सच्ची मानवता और सच्ची साधना बाह्य आडंबरों में नहीं, बल्कि अपने आचरण और दूसरों के प्रति करुणा और प्रेम में है।

कबीर का सामाजिक दृष्टिकोण एक क्रांतिकारी चेतना का परिचायक है। उन्होंने समाज में व्याप्त बुराइयों पर तीखा प्रहार करते हुए प्रेम, सहिष्णुता और भाईचारे का संदेश दिया। उनकी वाणी आज भी समाज को जागरूक और संगठित करने की दिशा में एक दीपस्तम्भ है।

धार्मिक सहिष्णुता और आध्यात्मिकता– कबीर की कविता का एक महत्वपूर्ण पक्ष है धार्मिक सहिष्णुता और आध्यात्मिकता का अद्वितीय समन्वय। उन्होंने अपने समय में हिन्दू और मुस्लिम धर्मों में व्याप्त कट्टरता, पाखंड और बाह्याडंबर को अस्वीकार करते हुए ऐसी आध्यात्मिक दृष्टि प्रस्तुत की, जो सभी धर्मों और सम्प्रदायों के परे जाकर एक सार्वभौमिक सत्य और प्रेम की ओर ले जाती है।

1. निर्गुण भक्ति और आध्यात्मिकता का स्वर– कबीर निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे। उनका मानना था कि ईश्वर निराकार, अजन्मा और सर्वव्यापी है। वे किसी मूर्ति, मंदिर, मस्जिद या धर्मग्रंथों तक सीमित नहीं हैं।

प्रसिद्ध दोहा

कंकर–पाथर जोड़ि के मस्जिद लई चिनाय।
ता ऊपर मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।।

इस दोहे में कबीर ने मस्जिद और उसमें की जाने वाली पूजा की व्यर्थता पर प्रश्न उठाया और ईश्वर को सर्वत्र व्याप्त बताया। इसी प्रकार उन्होंने मूर्तिपूजा पर भी तीखा प्रहार किया।

पत्थर पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूं पहार।
ताते ये चाकी भली, पीस खाय संसार।।

2. धार्मिक सहिष्णुता और समरसता का सन्देश– कबीर ने स्पष्ट कहा कि न हिन्दू श्रेष्ठ है, न मुस्लिम। दोनों ही मानव मात्र हैं और सच्चा धर्म प्रेम, करुणा और सत्य में है।

प्रसिद्ध पंक्तियाँ

कबीरा खड़ा बाजार में, सबकी मांगे खैर।
ना काहू से दोस्ती, न काहू से बैर ।।

यहाँ कबीर एक ऐसे संत का रूप धारण करते हैं, जो समाज के सभी वर्गों और सम्प्रदायों के लिए मंगल की कामना करता है, बिना किसी भेदभाव और पक्षपात के।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 06, June 2022

3. आत्मज्ञान और अंतर्दृष्टि की साधना– कबीर की आध्यात्मिकता बाहरी कर्मकांड या ग्रंथों पर आधारित नहीं थी। उन्होंने ढाई आखर प्रेम का मार्ग बताया, जिसमें सच्चा ज्ञान आत्मा की गहराई से आता है। उन्होंने आत्मबोध, ध्यान और साधना को जीवन का प्रमुख उद्देश्य माना।

प्रसिद्ध दोहा

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताया।।

यहाँ कबीर ने गुरु की महत्ता बताई, जो ईश्वर की ओर मार्गदर्शन करता है और आत्मज्ञान की प्राप्ति कराता है।

4. पंथनिरपेक्ष और समावेशी दृष्टि– कबीर की आध्यात्मिकता न तो किसी धर्मविशेष तक सीमित थी और न ही किसी सम्प्रदाय की सीमाओं में बंधी। उन्होंने ब्राह्मण और मुल्ला दोनों की संकीर्णताओं की आलोचना की और एक ऐसी साधना का संदेश दिया, जो मनुष्य की अंतरात्मा और उसके आचरण पर आधारित थी।

प्रसिद्ध पंक्तियाँ

हिन्दू कहे मोहि राम प्यारा, तुर्क कहे रहमाना।
आपस में दोऊ लड़त हैं, मरम न जानै कोई।।

यहाँ कबीर ने बताया कि दोनों धर्म ईश्वर को अलग–अलग नामों से पुकारते हैं, परन्तु उनके मतभेद केवल बाह्य हैं, अंततः सत्य एक ही है।

5. वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता– आज जब दुनिया धार्मिक असहिष्णुता, कट्टरता और अलगाववाद की चुनौतियों से जूझ रही है, कबीर की वाणी एक प्रकाशस्तंभ की तरह मार्गदर्शन देती है। उनकी आध्यात्मिक दृष्टि और धार्मिक सहिष्णुता का सन्देश आज भी सामाजिक समरसता और शांति स्थापना में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

कबीर की कविता में धार्मिक सहिष्णुता और आध्यात्मिकता का गहरा समन्वय है। उनकी वाणी हमें सिखाती है कि सच्चा धर्म बाहरी रूपों में नहीं, बल्कि प्रेम, करुणा और सत्य की साधना में है। कबीर की यह दृष्टि आज भी मानवता के लिए उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी उनके समय में थी।

समकालीन प्रासंगिकता– कबीर की कविता और दर्शन केवल उनके समय तक सीमित नहीं हैं, बल्कि आज के आधुनिक समाज और वैश्विक परिदृश्य में भी उतनी ही प्रासंगिक और प्रेरणादायी हैं। उनकी वाणी में निहित सत्य, प्रेम, करुणा, धार्मिक सहिष्णुता, और सामाजिक समानता जैसे मूल्यों की आवश्यकता आज के युग में और अधिक बढ़ गई है।

1. धार्मिक सहिष्णुता और समरसता– आज जब समाज और दुनिया में धार्मिक कट्टरता, असहिष्णुता और सम्प्रदायवाद बढ़ रहा है, कबीर की वाणी एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक है। उन्होंने हिन्दू–मुस्लिम विवाद, जातिगत भेदभाव और बाह्य आडंबर को निरर्थक बताते हुए सभी मनुष्यों को एकता और भाईचारे का संदेश दिया। यह दृष्टिकोण आज की वैश्विक दुनिया में धार्मिक और सांस्कृतिक सहिष्णुता की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 06, June 2022

2. जातिवाद और सामाजिक भेदभाव के खिलाफ चेतना– आज भी समाज में जातिवाद और सामाजिक असमानताएँ विद्यमान हैं। कबीर का दृष्टिकोण, जिसमें उन्होंने कर्म और आचरण को जाति से ऊपर रखा, आज के सामाजिक सुधार और सामाजिक न्याय के आंदोलनों के लिए प्रेरणा स्रोत है।

दोहा

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।

3. उपभोक्तावादी और भौतिकवादी जीवनशैली पर प्रश्नचिन्ह– कबीर की वाणी में सादगी, संतोष और आंतरिक शांति की बात की गई है। आज का समाज उपभोक्तावाद और भौतिकता की अंधी दौड़ में भाग रहा है, जिससे मानसिक तनाव और सामाजिक असंतुलन बढ़ा है। कबीर की साधना और आत्मज्ञान पर आधारित दृष्टि इस समस्या का समाधान प्रस्तुत करती है, जहाँ जीवन का लक्ष्य केवल बाहरी सफलता नहीं, बल्कि आंतरिक शांति और संतोष है।

4. शिक्षा और नैतिकता का समन्वय– वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में नैतिक और मानवीय मूल्यों का अभाव देखा जा रहा है। कबीर की वाणी में निहित सच्चे ज्ञान और नैतिकता का संदेश आज की शिक्षा प्रणाली के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है। उनका यह कथन कि ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय आधुनिक शिक्षा के साथ मानवीय और नैतिक मूल्यों के समन्वय की आवश्यकता को इंगित करता है।

5. वैश्विक स्तर पर मानवता की एकता– कबीर ने मनुष्य को उसकी जाति, धर्म और सम्प्रदाय से ऊपर उठाकर देखा। उनकी दृष्टि में सम्पूर्ण मानवता एक है। यह विचार आज की दुनिया में, जहाँ नस्लीय भेदभाव, युद्ध और विभाजन की स्थितियाँ बढ़ रही हैं, अत्यंत महत्वपूर्ण है। कबीर की वाणी हमें बताती है कि शांति, प्रेम और सह–अस्तित्व ही मानवता का भविष्य है।

6. समकालीन आंदोलनों और चिंतन में कबीर– दलित और वंचित वर्ग की चेतना, कबीर के विचार आज के दलित आंदोलनों और सामाजिक न्याय की लड़ाई में एक प्रेरणा स्रोत हैं।

असमानता और शोषण के खिलाफ संघर्ष– आधुनिक मजदूर और सामाजिक आंदोलनों में कबीर की चेतना और विद्रोही स्वर आज भी गूँजते हैं।

पर्यावरणीय चेतना– कबीर की सादगी और संतोष का संदेश आज के उपभोक्तावादी युग में पर्यावरण–संरक्षण के लिए भी प्रासंगिक है।

कबीर की कविता और उनके विचार आज भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं, जितने उनके समय में थे। वे धार्मिक संकीर्णताओं, सामाजिक असमानताओं और भौतिक लालसाओं को चुनौती देते हैं और प्रेम, सहिष्णुता, सत्य और सादगी का संदेश देते हैं। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में कबीर का दर्शन हमें एक ऐसी दुनिया की ओर ले जाता है जो न्यायसंगत, समरस और शांति से परिपूर्ण हो।

कबीर की कविता भारतीय साहित्य, समाज और संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। उनकी वाणी में गहन आध्यात्मिकता, सामाजिक समता, धार्मिक सहिष्णुता और मानवीय करुणा का अद्वितीय संगम दिखाई देता है। कबीर ने अपने समय की सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक पाखंड और आडंबरों के खिलाफ निडरता से आवाज़ उठाई और प्रेम, सत्य और सहज जीवन की ओर समाज को प्रेरित किया।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 06, June 2022

कबीर की वाणी में निहित 'निर्गुण भक्ति' की धारा ने धार्मिक परिधानों से परे जाकर ईश्वर की सर्वव्यापकता और आत्मज्ञान पर बल दिया। उन्होंने बाह्य आडंबर, जातिवाद और धर्म की संकीर्णता पर कठोर प्रहार करते हुए एक ऐसी मानवतावादी दृष्टि दी, जो आज भी प्रासंगिक है। उनके दोहों और साखियों में जीवन का गहन दर्शन, मानवता के प्रति करुणा और शाश्वत मूल्यों का सार निहित है। समकालीन परिप्रेक्ष्य में, कबीर की कविता धार्मिक असहिष्णुता, सामाजिक असमानता, और उपभोक्तावाद से ग्रस्त वर्तमान विश्व के लिए प्रकाशस्तंभ का कार्य कर सकती है। उनका यह संदेश कि सच्चा धर्म बाहरी कर्मकांड में नहीं, बल्कि मानवता, प्रेम और सत्य की साधना में है, आज के युग में सामाजिक और वैश्विक शांति की राह दिखाता है। कबीर का काव्य आज भी उतना ही ताजगीपूर्ण और सजीव है, जितना उनके समय में था। उनकी वाणी की सरलता और गहनता हमें यह सिखाती है कि भाषा, जाति, धर्म और सम्प्रदाय से परे जाकर हम सभी एक ही मानवता का हिस्सा हैं। उनके शब्द आज भी हमें प्रेम, सहिष्णुता और सत्य की राह पर चलने की प्रेरणा देते हैं।

अतः निष्कर्षतः, कबीर की कविता और दर्शन न केवल ऐतिहासिक महत्व रखते हैं, बल्कि वर्तमान और भविष्य में भी उनके विचारों की प्रासंगिकता बनी रहेगी। वे हमें यह सिखाते हैं कि एक बेहतर समाज और दुनिया का निर्माण प्रेम, सत्य, समानता और सह–अस्तित्व की भावना से ही संभव है।

सन्दर्भ सूची–

1. रामचंद्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रयाग भारतीय साहित्य परिषद, 2004, ISBN: 9788126721500
2. हजारीप्रसाद द्विवेदी, कबीर, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2018, ISBN: 9788126716377
3. डॉ. नामवर सिंह, कबीर की भाषा, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2007, ISBN: 9788126714151
4. डॉ. नरेन्द्रनाथ, कबीर, जीवन और दर्शन, दिल्ली साहित्य अकादमी, 2009, ISBN: 9788126027380
5. डॉ. धर्मवीर भारती, संत कबीर और उनका युग, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, 2002, ISBN: 9788180313052
6. डॉ. पुरुषोत्तम अग्रवाल, अकथ कहानी प्रेम की, कबीर की कविता और उनका समय, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2009, ISBN: 9788126716468
7. डॉ. रेवतीरमण तिवारी, कबीर, समाज और संस्कृति, वाराणसी काशी हिंदू विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2012। ISBN: 9789382012104
8. प्रो. रामविलास शर्मा, भारतीय साहित्य की भूमिका, नई दिल्ली, लोकभारती प्रकाशन, 2001। ैठछरू 9788180313144
9. डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन, कबीर का युग और काव्य, लखनऊ उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, 2010 ISBN: 9788172017766
10. प्रो. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', कबीर की सौंदर्य दृष्टि, दिल्ली भारतीय ज्ञानपीठ, 1998, ISBN: 9788126304245
11. डॉ. रमा शंकर अवस्थी, कबीर और भारतीय समाज, दिल्ली भारतीय विद्या भवन, 2003 ISBN: 9788175090315
12. डॉ. गोपाल राय, कबीर का समकालीन मूल्यांकन, दिल्ली साहित्य अकादमी, 2017, ISBN: 9788126037129

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 06, June 2022